

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥

(1)

श्रीगणेशाय नमः ॥ चित्रकूट पर्वती ॥ चार चित्रंगी
नांदली ॥ आद्य योग ॥ अग्नि सी ॥ लेणे रीती कर्म
लेती नमः सा ॥ पुढे कवण ये के दीना लरो ॥ चार
सा आरव ती भरी ॥ जाऊनो या उपरी वरी ॥ बीज
बीज भुजे ॥ २ ॥ चित्रंगी ॥ वज्र विया न के सामथी ॥
उपकारी ती पंती ॥ बहुता ॥ भुजे जे घडे तु से उ
चीत ॥ लोकार्थ वद करवा ॥ ३ ॥ उपरी वरी वोळ
द्या ल ॥ १ ॥ ये रीचा ज बीत ॥ जाहाला ॥ लेना द
रिंद्र ऐकीत ॥ रींद्र भुवनी ॥ ४ ॥ संगोद लासी

१॥ बोलो उनीगा हणेची त्रागी सयरे घेउनीगा लेपा
 ची त्रागी येले। तुजबोलावीले वज्जनाथे। वी
 न वीलीजाती चारातेगा हणे तुमी घरी राही
 जेगाद्या। लोहणेमीन राहेनी धरि। ची त्रागीने
 केला शृंगार। चपरा करनी भ्रम। सांगणे घे
 लीजातीपा। आनी रईस भेसी। नमस्कारी
 लेवज्जनाथी यासी। यरसणे दीमजातीसी।
 ची त्रागी हणे। तुमची यक रचा मीया। विगे
 ती होली सप्तक। सा विहल कदली जरा
 ससी। वेग करनी या नृपारसी। जरा पुल्या
 मंदीरास जाव। जल न लपे जरा भीला।
 रई चंद्र वसंतो फला। ले उर पुप वलती पु।
 नरपी चुकती ला लासी। यज्जनाथी आ
 ती कोपला। घडी घडी चुकरी ललाळा। लरी
 ज। यपडे हेउनी या सीळा। स मुद्रा माजीर।
 लयो जने। ११॥ ऐकोनी श्रापाची बोली। जं
 लरी थोर दचकती। हणे हेक मी गा चंद्र मोजी।

आरों कैसे करावो ॥ १२ ॥ आही लेसी जेजा
 टीपरी ॥ सीज होउनी रात सहस्र वरी ॥ ३ ॥
 दीर्घ पाउली होती ॥ मुमंडली ॥ मुमी वरी ॥ देखोनी
 रघुनाथ उधारीली ॥ १३ ॥ सीधु जली ॥ उरु को
 ३ ॥ पवीचारील माझे हीला ॥ जेहे करावी सुखना
 आवापा सोनीया ॥ १४ ॥ मगवीन कीली जातीव
 जसपाणी ॥ हनुमी बापराधी सहस्र उण्णि ॥
 करावी ॥ श्रापवाणी ॥ कृप ॥ करी रचामीयं ॥ १५ ॥
 मास्तान करावा ॥ आकरा ॥ जवीण नाही कोणाचा
 ॥ विक्रमच ॥ प्र ॥ १६ ॥

आधार ॥ सुची ॥ जन्म ॥ उधर ॥ करी सह
 ३A ॥ अनयना ॥ १६ ॥ अहे ॥ जेजा ॥ धिस ॥ क
 न्यप ॥ दा ॥ पा ॥ ची ॥ ये ॥ म ॥ ज ॥ ॥ क ॥ प ॥ कु ॥ वा
 अ ॥ म ॥ र ॥ न ॥ प ॥ ज ॥ ॥ क ॥ प ॥ म ॥ ज ॥ व ॥ री ॥ क ॥ र ॥ वी ॥ ॥ १७ ॥
 गुरा ॥ ल ॥ जे ॥ जी ॥ सु ॥ र ॥ ना ॥ था ॥ ॥ ह्य ॥ न ॥ त्प ॥ गि ॥ ना ॥ तु ॥ री
 या ॥ आ ॥ की ॥ ला ॥ या ॥ सी ॥ श्रा ॥ प ॥ नी ॥ वा ॥ र ॥ न ॥ क ॥ री ॥ ला
 ह ॥ ला ॥ ज ॥ क ॥ व ॥ ण ॥ र ॥ सी ॥ ॥ १८ ॥ नी ॥ क ॥ क ॥ क ॥ को ॥ प ॥ अ ॥ हे ॥
 हे ॥ लु ॥ वी ॥ च ॥ म ॥ नी ॥ पा ॥ हे ॥ जे ॥ गे ॥ नी ॥ मी ॥ ति ॥ हे ॥ ॥ ने ॥ ही

परीलीस आसे ॥ १९ ॥ ते कोनी गुरा चैवचना ॥
उश्राप दे सह भनयन ॥ दीदी पडली सुमान ॥ २० ॥
ना ॥ उम मगली पावसीला ॥ २० ॥ माझान करीवा
आ के रा ॥ तुजवीन नाही कोणाचा आधार ॥
तुची जठमाचा आधार ॥ करावा सह भनयना ॥
॥ २१ ॥ चीत्रांगी लुणें दे पारी ॥ मी पडेन जाक्षी
१५ जजा भीतरी ॥ नोलक्ष्यो जनन कर्मणे करी
मज के साही दण हो दिसा ॥ २२ ॥ चीत्रांगी लुणें
पेन करी चीतां ॥ ज्या नेनी वेळ हारो लेवे धा
तो प्रयत्न कसो लक्ष्य धा ॥ हा सवरायो सवधा
न धरावा ॥ २३ ॥ केले रीतें सदं वला ॥ पावली
चीत्रकुर पवती ॥ चारा करी वारना ॥ साजे
जे र्दिवो ली लाहेला ॥ २४ ॥ चीलान करी कां
ही महोणार ते नचु के केकी ॥ हरी हा र्जो ली के री
तो हरी ल के र ॥ गुणे ॥ २५ ॥ चारा करी समा
धाना ॥ वेगी सारी ले ॥ जो जन ॥ केले मंचकी
रायना ॥ रात्री मासारी ॥ २६ ॥ जे सी नी हां

के ली॥ होरी कुज ले मचं की राही ली॥ अस्त
 गेला सींधु जकी॥ सीक हो उनी पडीयती॥ २७॥
 ५ चार उदोनी प्राः थः काकी॥ काही काचन
 रत्ने दोलकी॥ नीधरा जाला लये वनी॥ मार्ग
 ४॥ रुद्री राज हायराचा॥ २८॥ लो आ लो का
 क मा ध्यानी॥ चार करी वी नवणी॥ मजे जी
 आ जी मह पशुवनी॥ न जन उनी साजोवा॥ २९॥
 तेणे वाही ल प्रदी॥ आ पुन उतर हा आ पुतेम
 टी॥ हेरो पसी ला करे संपदी॥ सक जा सी जाली

१०॥ जना॥ ३०॥ तेथे क मा लो॥ लो हो वरा॥ प्रभल
 न मो नीयारा लेहा॥ मनी ची ले नी परम पुरावा॥
 ५० गमन करी ला जाहाला॥ ३१॥ आवला बंदी का
 श्रम॥ मुराचणी मा॥ रुद्री प्रेम॥ कथी ले आ
 पुले मुळ कमी॥ जी ल के हो ले ले वी पलो॥ ३२॥
 गुन हारे ऐक ये के वचनो तरा॥ गुवा जो वश्ये
 सबंद रा मे श्वरा॥ मेळवोनी यार रा से श्वरा॥
 कराये आनंद ३३॥ आने उदं राधांनी॥

अधिब्राह्मणसलमपविी। अधिलिच
रा अधिधीयासलमपविी। मुखे ह्यपलेक
५। स्थापिग। ३८॥ तेथे असली मह कुमी लथ
६। या पावला तो आन धमी। हारे लू आवधा श्री
मा। चीतले फल रावसी सवध्या। ३९। आ
नदाना समाना। दुसरे नाही गा दान। यद्दधी
आहे ब्राह्मण विचना। ते लू जयसी सांगे हे क॥
॥ ३९॥ श्लोका। गज। सुरग। सह। क्रुग। कुक। भुमी
दान। सुवर्ण स्वयंतः पात्रः। तेही नी सगरांत॥
(७) उभय कुल ह्युद्ये की कन्या प्रधान॥ नकुली
समलुप्तः। अ। नदान समाना। टिका। ये कुली
ये दाने॥ न के ली गा लया समाना हिंश्रु लीश॥
रत्ना ये वयन॥ वौ ल पुगणे॥ ३९॥ आनी क
हैं कें गें। ये कै वी अपरा। कणी ये वडा दान सुभा॥
ले या आंत पार थोस॥ दुसरा ऐ की लांना ही॥
॥ ४०॥ तो पड का हो। तारणी गा। लया चे सवपा
होगे लाच क्रपारी। ब्राह्मण चा वे सधरा नी॥

एचलीसुखोनीउ॥ ३९॥ काही
नाही तयाजवळी॥ तवदंतीचीर॥ नआठव
ली॥ ह्मणेदेरिपारानकरंकमळी॥ रत्नेदंती
चीलुजदेरिनि॥ ४०॥ देवोनैदीपाराण॥ ह्मणे
मीवीन्मुखजारी॥ लोभावीकसण॥ नचन॥
धीरकरीस्वामीया॥ ४१॥ मगअजणचीक
टठउला॥ बाणचाकउगडाला॥ रामराम
स्मरोलारा॥ करीघेत॥ रापवाणा॥ ४२॥ ज
वदंतीहापोपहिपथर॥ तिचलुगुजउभा
॥ बोकमचाप्रा॥ ४३॥
मधस॥ मरामकाकणिये॥ नुजजा
ना॥ ४४॥ जीजाजालेतीप्रसन्न॥
दयावमजआन॥ येणेकुसहो
गप्रयाणकरी॥ ४५॥ देवहजेल
घडलेनाहीलुहाले॥ लेमीकणियेथे॥
दीदुतुज॥ ४६॥ दिधलीयावेगजेन
गारतना॥ चारसीदारववीत॥ लोह
केतुपा॥ आगादेवराया॥ ४७॥

गारबीनेदना॥ तुआटची उरपुलेभां
ते॥ कायाचाचामना॥ संकल्लुकैलजा
कण्ठमणेजीरसोरगधरा॥ कोणीयेक
पारा॥ मीजातहोसोराजदारा॥ त
कितला॥ ४८॥ लेणेमजआनंद
तलेवचनीहणहिले॥ दुराभी
दक्षयकरे॥ दुरजनीकडुमि॥ ४९॥
गाहेकरवीसुला॥ अंगोलीधाली
ला॥ लेणेहोसीलसंघ॥ वृत्तला॥ ५०॥
रेत॥ ५१॥ लेणेमुनीधालीअं
नआमृतवृष्टीकली॥ जगोरेदुरस
टिकुरःत्रुसीचा॥ ५२॥ मगजा
नीला॥ जयजयाजीआनंता॥ तु
पुणगीपीनाथ॥ मजआनाथावे
यो॥ ५३॥ इतुकीकासननाआहेही
नदानधडलेनाही॥ तैसीमजपाव

लंसी ॥ ६३ ॥ हारी हने कणलि धारु ॥
हो रलि मनोरथ ॥ सपवो नी रे वी लाम
तु ॥ अ न दान लु प्य ध डे ल ॥ ६४ ॥ ले
स स्रो डी ला ॥ सो श्रो या क हे उ नि ॥
धं गी च गुण व्य लो क ॥ प ली
गी ॥ ६५ ॥ स व पा ह य या ल या च ॥
री ले य य क च ॥ बा क मा गी ल ले
लो ला क ना व त या सी ग ॥ ६६ ॥ ले ही ज
रा र यी ले ॥ पो टी ने या क दी ध ले ॥
॥ वी क म च प्र ॥ १७ ॥
ज न लो ॥ पु न व नी लि ज हा ही ने
गी ज न न दाना प र म यो र ॥ ज न कि
गा वी च्छा रा हि प री से नी उ त र ॥ च्छा
नि द ल ॥ ६८ ॥ स ने ज य ज य ज गी गुर
लु ली र च गी ल ली ज न दाना ची क थ ॥
रा प ली जी वा स ॥ आ दृ ग म र ने नी वा
ह ने नी गे ल लो रा गं नी म मा थ रे वी
नी म न न उ न र न्ना द ॥ यी म ज ल ॥
धु ली रा ज वा य या ची ॥ ६९ ॥ पु न र पी

॥ ६३ ॥ गुरुचानीरो पधेनला ॥ देख
नीला ॥ स्वेतवधसी ॥ ६४ ॥ पावला
॥ शिंधुजवळीके लेखनान ॥ रामली
नणमगकायकरीला ॥ जहाला ॥ ६५ ॥
शालयेकराधेवणे ॥ हातुरसेनीपज
पन्ना ॥ आधिकेले ब्राह्मणसंतर्पणा ॥ आ
नीधुजली ॥ ६६ ॥ मरधीलणे कसबा
नी मंगरमीना ॥ कुर्मजाले धातु
तपधरीला ॥ ६७ ॥ ब्राह्मणमीका
धीली ॥ नतयंगरा ॥ जरीसां
तरी गंधारपायसाराकराचा ॥
साची ॥ नीला ॥ पुढेकावि
नीला ॥ हेरसेकरीदीनाप्रतीगाजक
नीला ॥ आसंरचाल ॥ ६८ ॥ हेरसाकनी
येका ॥ आलीभद्रीलागरेककीका ॥
कायचादुकरावा ॥ ६९ ॥ लवमाध्याज
साराणे आन्मधातलेजकीगा ॥ जळच
मीमेकी ॥ ते पुरसली चारले ॥ ७० ॥

चातलेहाडुरसआन् ॥ कायउसी
मन्ना ॥ हि सांगा वीची वंचना ॥ लोवरी
माने लुरे ॥ ६५ ॥ ऐकोन तया चयचन ॥
॥ सी चारो मण ॥ आन् लुरी ॥ ६६ ॥
मना सांगेना ॥ ७० ॥ तेन ऐकली जळच
॥ ॥ धी सांगा गाभी धरि ॥ चारो मण
॥ ॥ सा रे कामे ॥ ७१ ॥ टिधुं ॥
॥ यो जने पडीली आसे सीळा ॥
॥ उळा ॥ ७२ ॥ उदय काळी ॥ ७३ ॥

॥ ॥ निसचा ॥ ७४ ॥
लेयेकमेक ॥ वी चार तीयेक ॥ पेउली जे हे मणली ॥
॥ ७५ ॥ आरुण उदय ॥ सी काळी जळचो ॥ लीही ॥
॥ ७६ ॥ पाथर ॥ पुर्व उगयता दीनकर ॥ वी वं
॥ ७७ ॥ पडीले सी केवरी ॥ ७८ ॥ वी वं पडता क्षणी ॥ सोळा
॥ ७९ ॥ जाली पाणी ॥ नीघोन गेली तलक्षणी ॥ जैसी ल
॥ ८० ॥ लपे वी ह्यु लत ॥ ८१ ॥ लेजाली मन वोढी ॥ री
॥ ८२ ॥ घाली आरु पुकी स्पकुडी ॥ नगर जनाची फाटली
॥ ८३ ॥ साकडी ॥ करीली ॥ ८४ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

रुकि डे सी धूरी ॥ चपरा आन चतुर्गुण करी ॥
तै टा की ली जबा भी लरी ॥ सक के मक्षरी ली त्रुप ॥
वरी ॥ मगु काय करी लै जाहा ले ॥ ७७ ॥ आन ध्य
रं ने जी ली ॥ तै चपरा पुढे टे वी ली ॥ लुचा आमु
ची वासना त्रुप के ली ॥ रितु के ध्यावे उची ता ॥
॥ ७८ ॥ चपरा वीन वी लयो ॥ लुमची या प्रसाहे
आहे लर ले बहल ॥ ले करी आग्रह्या ले ॥ लो आ
गों कार न करी ॥ ७९ ॥ मागि सा त्रुप जल चरी ॥ च्या
र वीन वी लु बहु वा वरी ॥ वासी रन ॥ चो आगी
कार करी ॥ पुछा ती उल ॥ जासली ॥ ८० ॥ च्या
र लप याची को पगली ॥ प्यी ली सांगाची भज
प्रती ॥ जल चर सांगाती रली ली ॥ ले आ पुर्व परी
ये सा ॥ ८१ ॥ ले लपली लय ॥ च्यी पुजा करा वी ॥
ये क पाही जे जी लुकी आने पुर वी ॥ ये क चोली
रं राव दा र्य वी ॥ जे ध्य वरी आसे ग मन ॥ ८२ ॥
ये क प्रवे रा वी कन का ॥ चपरा सी ॥ चपरा वी चा
री ॥ पुला मान सी ॥ आंगिकारी ली ली नही रली

सी॥ येरे का हो न धेयी॥ ८३॥ पर स्परे आंदर
करीली॥ च्या रा अरुना पुसेल कचरा प्रली॥ १२५॥
ब्राह्मण होले आनाथेरी॥ कासी देवरत्रा जंकि कस॥
॥ ८४॥ लया जा वधी याले बहु उवीले॥ येकर तन
१३ करी धेतले॥ मनी चीलन के ले वद्री कां श्रमाचे॥ १३
॥ ८५॥ ले आ कासी उपरे मळा॥ वद्री का श्रम पा
चला॥ गुरासी वमीला॥ लला॥ पुढती धाली दे
उकला॥ ८६॥ सने जा वधा वला॥ वीहील केती
रत्नाची माला॥ गुरासे लोपला॥ वला॥ सने जा

१४ जय होर सर्व काना॥ ८७॥ पुढे गुन सीधाली
हंडवला॥ नीराप पुसी॥ लालीला॥ चीलला चीत्र
कुरप वली॥ पावला पवन येगी॥ ८८॥ प्रवेश
१४ नगरी॥ रीद्यु के लार॥ जमदी रो॥ चीत्रांगी
दे रची लाभा व स्यरी॥ धाली लोरा गण उरोनी
या॥ ८९॥ च्यरणी धालली सीरी॥ मस्तकीची
से॥ ९०॥ चीरगुरी मपाय साडीले॥ जरा जुदीग
आली ज्ञान दे करानी॥ ९१॥ गेलामु हाभील

रीग मचैकी बैस उनी चरण क्षाब्ध न करी ॥
७३। अ॥ अंग गजाला सखर वेगी ॥ सारी लीज लो ७३।
गण ॥ ७१ ॥ दोघे सुरव स भोगी सी ॥ कर्म ली
ले नो सी ॥ उदयो जाला दीन कार सी ॥ चार सा
री नीत्य कर्म सी ॥ ७२ ॥ ऐसे कर्म ले प्रास लीनी ॥
१५। लव चार सी ॥ अटवे मनी ॥ जाला उनी उपरी
भुवनी ॥ भेरी आही न मणी ॥ ७३ ॥ वल वि
या आरा कुः चीत्रा गी ॥ उपरी चरी वल धत्ता
वेगी ॥ ७४ ॥ अ॥ वीनी सखर वणंगी ॥ ताज
वीली भेरी लो ॥ ७५ ॥ तीय चा दीध नुदु ॥ का
भेरी कोला आं रे ॥ दुतारी करी जालु वा
दु ॥ बाला वारे चीत्रा गी ॥ ७६ ॥ दुत जाले हरी ल
१५। चीत्रा गी रजाला वीली माला ॥ तुल बाला वी लो
आमर नाथ ॥ नृपकारणे सुंदरी ॥ ७७ ॥ ऐ
कोन दुल वचन ॥ भयाभी लाले चीत्रा गी
चे मन ॥ हने के से वो दवले वी दू ॥ आता क
वण वी आर करे पो ॥ ७८ ॥ आल मने न करी ची
ल ॥ मी मंदगी होई न आता ॥ लव उल मकरा

वेनृत्पा॥ लोशउगियाईद्रंलो॥ ९८॥ मंगची
 लोलाहारीहार॥ केलासर्वहीशंगार॥ चोरोमहं
 गीचलुरा॥ करीवस्त्रेपरीधाना॥ ९९॥ वेगीआ
 लेसभेसी॥ नमस्कारीलेरायसी॥ ईद्रंमान
 दीधलाचीनगीसी॥ करीनृत्पहणीतले॥ १००॥
 १५ मलीच॥ येकनादःराळमहंगासी॥ बैसला
 छेदेरागेसी॥ मेळवीलावेदसी॥ चसंतभा
 लवोनीया॥ १०१॥ केलेगणराचेचीतन॥ ला
 रुजेसी॥ केलेनमनाश्रीहरीचेचरणीधारीलेध्यान

१०२॥ वीकसचाप्र॥ १०३॥
 हारगालुसवोडवोदधाना॥ १०४॥ १०५॥ मीसकेले
 दंडवत॥ थोथेथोरराक्षदुलत॥ आहरीलेउत
 मनृत्पा॥ आलीरुनसगायना॥ १०६॥ नाचना
 चलीपरवडी॥ ससलालधाकलोडी॥ हेवपा
 हातीलेलीसकोडी॥ आलीअनंदेतदसु॥
 १०७॥ कोणगलीत्यानृत्पाची॥ पाहाताही
 दीनपडत्पाईद्रंची॥ राहोरोनमालकं
 टीची॥ चीत्रंगीसदेतजाहाला॥ १०८॥ ची
 १५४ त्रंगीनेआपुलेकंटीचीमाला॥ तेघालली

अराच्या गंळ ॥ रिंदुसे लयेवेळा ॥ लोकवण
 होनी ॥ १०८ ॥ चीत्रंगी हणजे जीरे सुर
 जणे नीवारी लयेवेढी येदुसरा ॥ वाहाता म
 हुहारा प ॥ पुनायेणे मजकडे काही छीले ॥ १०९ ॥
 कोनी सले पलास हरत्र नयना ॥ हणजे केवडा
 केका प्रयत्न ॥ माग माग जातो प्रसन्ना ॥ काय र
 ॥ ११० ॥ अरा हणजे जीरे सुर
 श्वरा ॥ जरी मज प्रसन्न जातली जीदालस ॥
 तरी मरल कीरे चीज कय कर ॥ मग मगेन

॥ वीक पुचा अष्टा ॥
 वरदाना ॥ १११ ॥ इंदु वीला मजकी होला ह
 जे जीयेक अज मज ॥ ते मज देगी तारील
 देव राया ॥ ११२ ॥ चीतदय विचीन तीली ॥ नृप
 न बोलावी चीत्रंगी सी ॥ जरी म्यात्रा हाटी
 ॥ ११३ ॥ ते जेरी सी ॥ तरी नबोत्त वावेचामीया ॥ ११४ ॥
 रिंदु हणजे काय मागी लठेरे ॥ जायरे सर्व लदी
 धले ॥ आणी क काही मागव हीले ॥ येस
 हणजे रिल केज पुरे ॥ ११५ ॥ रिंदु कावर मागील

१६ तर्ज्या रादि गौर वीला ॥ नीरो पदे उनी ॥
१७ धना ॥ चीत्र कुटासी ॥ ११३ ॥ अष्टपुल्या संदेत प्रेकी धा
राती ॥ सारी ती सं ध्या उंगे की ॥ ओजन
के ले लाका की ॥ जानंद भीरीत हे उनी या ॥ ११४ ॥
तया चा काय संगे आनंद ॥ जाणे पुण्णिरी
ल भर ला सीधु ॥ कीरो वला गोची दु ॥ शुध
मली ॥ ११५ ॥ सलो रला लो विसु ॥ रवीये
नीया के ली प्रकाट ॥ दावा धि उला ये क ज
सु र सु ॥ सुख से लारी व सला ॥ ११६ ॥ चोत्रा
गोपुरा मुख रतां ल सीय काय उद्ग कोण कोण
असली ॥ ले म न रंग ॥ लो वीली ॥ ११७ ॥
संग अ व घी सु मुख मातु ॥ वास्तव्य चो रा
जी कतु ॥ नान वरीय चा ॥ ११८ ॥ कुदु बंत
री अ स ती दो ये बंधु ॥ तय मनी अर व ती व
धु ॥ मगरा ही ल र व धु ॥ पु दे का ही ने व ले ची ॥
॥ ११९ ॥ चीत्रांगी हौण सामं ल सा गल ॥ कंर
रा ही ले नी वांरा ॥ का के ले नी गुहा न संगा

कहु बंवीच्या ॥ १२० ॥ श्री उहे की नाही ॥ १७
 १७॥ धी सि व रो या म धरी का हो ॥ आणी प्रज्वा
 उसी गे हो ॥ कोली ये क ज सली ॥ १२१ ॥ सांग
 श्री चा वी च्या ॥ मने मज वी नही कोणा च
 १८ ॥ अधरा ॥ ती ने घे ल ला हो ला वर वसी या च क
 रा ॥ जे उच पुतां वी सर न डडा ॥ १२२ ॥ ले बो ल
 उच व ला ॥ मने उनी चो म ये वा ट ला ॥ हा का
 ल परी ये त वी सर प ड ला ॥ न न हो ते उची का का
 जी ॥ १२३ ॥ १२४

१२५ ॥ वी क्र म चा ॥ १२६ ॥
 चौत्रा गी च्या रा गी लप ॥ तुमी ये थे ल या सी धे
 उनी ये पो ॥ का हो र च रा य नि धरणे ॥ हे १२७ क
 मा सी आ से ॥ १२८ ॥ ले व डी ल मा सी ब ही नी ॥
 १२९ ॥ सखी सांगा ती पी ॥ जे मज दे र ले आं न पा पी ॥
 ते भ द्रु नी आ से ना ॥ १३० ॥ ते म न ले च रा सी ॥
 उद्यो ज्वा ला दी न करा सी ॥ चौत्रा गी लि ने च्या
 रा सी ॥ जी जे आ ता करा वे ॥ १३१ ॥ म स्या आ
 स ती ग म न पा दु का म र पा च्य रा सी धा ती गा

नायका॥ जवोनीया मृत्पलोका॥ वीगीआ
 पीकांतेले॥ १२५॥ सवेधेपलीरनेकांयना॥
 पाहुकावेहीवेहीतचरण॥ करीधरीगमना॥
 (११९) रत्नेमंणीचपरटापेचीतले॥ १२६॥ तेथुनी
 उडाता॥ लोमृत्पलोकासीआता॥ चारटा॥ १२७॥
 पावला॥ अरेलापेटुनीनगरजनारो॥ १२८॥
 गेलेबंधुचीयानगरासी॥ सांजीगणेहुनिनेक
 श्रीवीरलेसेसी॥ सणचलाचीचकरासी॥
 सांगावेस्यगारिणी॥ १३०॥ तेरवदस्वदाहाससी॥

याचीपालरलीनहीपुर्वेलेली॥ चारना
 चसपा॥ सावठपुनवातले॥ १३१॥ नसेडी
 (१२९) गासंगतीनगरजनची॥ च॥ उनीहीगाचीच
 कुराची॥ सोडेनिजनमभुमीकावडीलाची॥ आ
 हरीनयेउगासचथा॥ १३२॥ चारवोलेजेबंधु
 सी॥ आता॥ पाचावीटा॥ सणलीवृथारचट
 परा॥ काळाचीलाआसे॥ १३३॥ चारसणे
 मचीवासनाकुडी॥ सणोनीजालीमासीआ
 नावडी॥ देवेद्यातलीआसेआ॥ मानी

चीवे जी। तुम सके ये भगवत। १३४। रा
वणाराक्षस कुंभकणी। नीलसंगलावीभी
हाण। ते नये तपाची या भांतः कण। वीर्ये
१३५। ते मानेला १३५। ते शीण गला रघुनाथसी।
सहारी ते राक्षस कुंभसी। रायदी धलेवी
भीराणसी। नारायणो १३६। ते सेमी सग
ल असे तुम आही तारी। लहासी वारले
आ नही तारी। अलीक ही कुंभ वंदुवसी।
मजरचगारिगी लीया १३७। सगमी धी कुंभ
हाले नेणला। द्रव्य हा ही ले पुले रवे कला। ते
दयावे आला। तयुने करनी १३८। स
पवोनी के रमरला चारासी। गणील नही
पाचुपरी लासी। हीरे माणी के गोमहासी।
१३९। समपी लिला हा ला १३९। मग ले युनी उरल।
लवले परी धुलावे कला। कायबोल सी
हासी १४०। धांवोनी वंदी ल पाया। सोजी
धीर सुदी लाजी कम काहे। उलमं असे नी

बोस घानी पाहो। करी चरणे प्रद्वामण।
१४१॥ सवेची जोहाती संध्या। जांगो जा। १४०
२०॥ जमजल तेथ थाका की। उची दू पात्र जेवी। २०॥
बाकी जा नंद करानी। १४२॥ चार हाथे को।
ते सींग के से आसे तु से मान सींग की वा बंधु
सारी रवी हो सींग हा। के डी सें दे हो। १४३॥ लेख
छा जी काला मी मंगल हो लक्षार के बोधा था। ज
पती भरे रवी लल्लो। लो म ज पावता ज। १४४

१४५॥ क्रम च। प्र। १४५॥
धन्य दी वरु ज जी। ज। ता। तु। ता। या। पा। या। च।
अमहारी ता ज। च। ज। ह। र। व। नी। य। ह। १४६॥
२१॥ ज। ता। के। से। तु। ज। सो। डी। नो। ह। न। वे। नो। व। के। कर। द्य
री। ते। च। र। ण। ज। सु। वे। छ। छ। तो। ली। न। य। ने। ग। ही। व
र। न। ध। र। ल। ज। ता। १४७॥ अ। र। बु। ज। ची। का। ता।
ल्ले। गे। का। ही। न। करी। वो। ची। ला। र। च। ग। नि। र्। न। ज। ता।
च। ल्ले। म। ज। स। ग। ते। १४८॥ म। ग। ले। बंधु। ले। पु। सी। ले।
ते। ही। न। ये। ल्ले। प। ती। ले। म। ग। च। र। ने। का। य। के। ले।
ते। प। पु। र्वी। प। री। ये। स। १४९॥ र। त्री। बें। स। वी। ती

स्कंदी॥ पादुका लई त्वाप दीपर तन कवली की
मृही बंदी॥ चित्रकूट ची तले॥ १४॥ सकला
सी के लान मर कर॥ अंतराक्ष करी गान ना॥ यो
मंगे ला लंधुन॥ बंधु करी ली कर कदा॥ १५॥

२१ ह्मण ती थोर वोर चरे जाते॥ चारा सारी रेचे २१
रत्न गेले॥ आ मंचे पाप ना ही सरले॥ कैसे
नी होई तस्य गे प्राप्ती॥ १६॥ नगर जन दुश्ची
सी॥ ह्मण ती पुढा सी कै सीटा की ली मली॥
फुकर श्चमी प्रीसी॥ लेनी बुधी पुजे सुं जी ली॥
१७॥

१८॥ श्री क्रम चो॥ प्रा॥ १७॥
नगर जन राही ली नीवाली॥ चारा पाय लची
त्रकूट पर्वती चित्रा॥ नमस्कारी ले सवली॥
वडी लमान देउनी॥ १८॥ आदी प्रीती ली द्या
सी॥ मया दाना ही त्पा सुखारी॥ प्रती ही
नी त्राहारी भेरी सी॥ उपरी यगे वळधोनी या
॥ १९॥ इह ले कोनी भेरी ची ध्वनी॥ गुंभीर
न॥ देहे के कांनी॥ परी चित्रा गिल गुनी॥ ने
बोलावी नरपासी॥ २०॥ ऐसी ले सुखेना

नांदरी ॥ राम राज्य करीली ॥ दिल की कथा पझी
जी प्रती ॥ सांगी सली राज हें सो ॥ १८६ ॥ पझी
चा पण पुण जाला ॥ तब सुयी उद योजा लागे ॥ १८७ ॥
२४ ॥ सव प्रक्षेपला ॥ काय करी वी क्रमा दीसु ॥ १८८ ॥
७ ॥ ची क्रम सणे पझी गोरी ॥ सपुर्ण केले लुसो
ये काम ने सी ॥ माळ धा लि दल रोना सी ॥ न
करावा वी लुबु ॥ १८९ ॥ बोला वी लु दल रोना
सी ॥ वी क्रम करवी मंगल रत्ना सी ॥ लगे
रता वी ले हो द्या ॥ जण सी ॥ गंध वी वी वाह करानी ॥
॥ १९० ॥ रोरी ॥ अरी कथा पुंरने नहाले ॥ पझी ॥
७ ॥ वी क्रमाले ॥ लुसो य ॥ उपकारा लो सार
ना ही ॥ १९१ ॥ शिली करी दल रोना ॥ लगे लुबु
वा ॥ चवी ला प्राणु ॥ उपकार जा हो लांग हुनु ॥
७ ॥ जन्मा तरी फी रेना ॥ १९२ ॥ दल रोना आणी
पझी ॥ लुरेवे नांदरी वी वर भुवनी पवा
क्रमे रे साने दीनी ॥ उपकारी हेर ची ला ना ही ॥

१८२॥ नीरोपधेउनीनीद्यात्ता॥ वीवरदा
रेवाहीरअत्ता॥ पुढेकायप्रसंगधउत्ता॥
१८३॥ इलीश्रीवीक
चरीअरव्याजप्र१॥ मणिमल्लु॥ श्रीकापु
॥ मल्लु॥

२३॥

२३॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com